**Notification No. 531/2023** **Dated: 03/03/2023**

**Name: Ahmad Azeem**

**Supervisor: Dr. Asif Umar**

**Department: Hindi**

Title: JAYASI KI PADMAVATI AUR MEDIA KI PADMAVATI KA TULNATMAK ADHYYAN (जायसी की पद्मावती और मीडिया की पद्मावती का तुलनात्मक अध्ययन)

Keywords: जायसी की पद्मावती, मीडिया की पद्मावती, मिथक और इतिहास, उत्तर-सत्य, स्त्री-अस्मिता

## स्थापनाएं (Findings):

प्रस्तुत शोध कार्य के द्वारा पद्मावत में मिथक और यथार्थ एवं लोक कथाओं में चित्रित पद्मावती की ऐतिहासिकता का विश्लेषण किया गया है । भारतीय जन पर मानस- की जायसीपद्मावत का कुछ ऐसा प्रभाव हुआ है कि एक बड़ा वर्ग इस कहानी में कल्पना और इतिहास के बीच के अंतर को पहचान ही नहीं पाता। मीडिया द्वारा ऐतिहासिक पात्रों को तोड़ की पात्रों में पद्मावत कृत जायसी जबकि है गया किया प्रस्तुत कर मरोड़ - है। मिलती को देखने एकनिष्ठता और सहजता मीडिया की पद्मावत ने ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण पात्र जैसे अलाउद्दीन खिलजी की एक महान शासक की छवि को व्यावसायिकता के चलते धूमिल किया है। जायसी की पद्मावत में स्त्रियों के अस्तित्व के लिए संघर्ष स्पष्ट दिखाई देता है जबकि मीडिया की पद्मावत में वैसा रूप नहीं दिखाया गया है । मीडिया ने पद्मावती के उत्तरहै निभाई भूमिका बड़ी में करने प्रबल को सत्य- । संजय लीला भंसाली की पद्मावत में व्यावसायिकता के प्रति अधिक झुकाव दृष्टिगोचर होता है जबकि जायसी की पद्मावत में लोकमंगल और लोक कामना स्पष्ट दिखाई देती है। जायसी कृत पद्मावत समन्वयकारी रचना है लेकिन मीडिया के एक बड़े वर्ग में पद्मावत पर आधारित विभिन्न लेखों की भाषा अशोभनीय और उन्मादी है। मीडिया अपने उत्पादों के माध्यम से जायसी की पद्मावत की मूल भावना को उसी प्रकार से प्रस्तुत करने में सफल नहीं हो पाया है अतः जायसी के इस प्रेमाख्यान महाकाव्य का प्रयोग वर्तमान समय में समुदायों के बीच नफरत को कम करने के बजाए उसे बढाने के एक औज़ार के रूप में हुआ। मीडिया ने पद्मावती के उत्तर-सत्य को प्रबल करने में बड़ी भूमिका निभाई है।